11-04-2023

हेन्दी दैनिक [सम्पादकीय] Email:-danikdeshmorcha93@gmail.com
कानपुर,मंगलवार 11 अप्रैल 2023 7

वर्ष 2025 तक इथेनॉल सम्मिश्रण कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहा

दैनिक देश मोर्चा संवाददाता
मनी वर्मा

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर ने मक्का से इथेनॉल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान और विकास कार्य करने के लिए आईसीएआर भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू पर आज लुधियाना में प्रो. नरेंद्र मोहन, निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर और डॉ. एच. एस. जाट, निदेशक, आईसीए-आर- भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना ने हस्ताक्षर किये समझौता ज्ञापन आईसीए-आर भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना द्वारा विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों के लिए उपयुक्त मक्का के नए संकरों के विकास और राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर द्वारा अपनी नैनो इथेनॉल इकाई में उनकी इथेनॉल उत्पादन क्षमता के आकलन के

पर आधारित है ये समझौता मक्का की खेती कर रहे किसानो की आय बढ़ाने एवं कम लागत में मक्के से इथेनॉल उत्पादन करने के लिए मील का पत्थर साबित होगा, दोनों निदेशकों ने आशा व्यक्त की मक्का वर्ष 2025 तक इथेनॉल सम्मिश्रण कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहा है इसके लिए, अनुमानों के अनुसार, चावल और मक्का से लगभग 7000 मिलियन लीटर इथेनॉल का उत्पादन किया जाना है ताकि पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण, पीने योग्य शराब और केमिकल इंडस्ट्री के क्षेत्रों अल्कोहल की आवश्यकता को पूरा किया जा सके, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा । उन्होंने कहा कि किसानों और उद्योग की लाभप्रदता की स्थिति के लिए, हमें मक्का आधारित इथेनॉल के लिए स्व-टिकाऊ जैव-रिफाइनरी मॉडल विकसित करने पर जोर देने के साथ कारखाने उत्पादकता बढ़ाने पर काम करना होगा देश में मक्का की कृषि उत्पादकता लगभग 2.7 2.9 टन/हेक्टेयर कम है और ये विश्व के औसत की लगभग आधी है देश मे आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, बिहार, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश आदि प्रमुख मक्का उत्पादक राज्यों में उत्पादकता काफी हद तक भिन्न है, एवं यह खरीफ और रबी की फसल के रूप में भी भिन्न होती है डॉ. एच. एस. जाट, निदेशक आईसीएआर-इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च ने कहा, हम विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त मक्का के नए संकर विकसित करके इस मुद्दे को हल करने का प्रयास करेंगे।

मक्का से इथेनॉल उत्पादन पर बढ़ावा देने के लिए...

शर्करा संस्थान का मक्का संस्थान लुधियाना से करार

नगराज दर्पण समाचार

कानपुर।राष्ट्रीय शर्करा संस्थान ने मक्का से इथेनॉल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान और विकास कार्य करने के लिए आईसीएआर भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू पर आज लुधियाना में प्रो. नरेंद्र मोहन, निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर और डॉ. एच. एस. जाट, निदेशक, आईसीएआर भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना ने हस्ताक्षर किये। समझौता ज्ञापन आईसीएआर भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना द्वारा विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों के लिए उपयुक्त मक्का के नए संकरों के विकास और राष्ट्रीय शर्कर संस्थान, कानपुर द्वारा अपनी नैनो इथेनॉल इकाई में उनकी इथेनॉल उत्पादन क्षमता के आकलन के पर आधारित है। ये समझौता मक्का की खेती कर रहे किसानो की आय बढ़ाने एवं कम लागत में मक्के से

इथेनॉल उत्पादन करने के लिए मील का पत्थर साबित होगा, दोनों निदेशकों ने आशा व्यक्त की मक्का वर्ष 2025 तक इथेनॉल सम्मिश्रण कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहा है। इसके लिए, अनुमानों के अनुसार, चावल और मक्का से लगभग 7000 मिलियन लीटर इथेनॉल का उत्पादन किया जाना है ताकि पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण, पीने योग्य शराब और केमिकल इंडस्ट्री के क्षेत्रों मे अल्कोहल की आवश्यकता को पूरा किया जा सके, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा। उन्होंने कहा कि किसानों और उद्योग की लाभप्रदता की स्थिति के लिए, हमें मक्का आधारित इथेनॉल के लिए स्व टिकाऊ जैव रिफाइनरी मॉडल विकसित करने पर जोर देने के साथ कारखाने उत्पादकता बढ़ाने पर काम करना होगा।

मक्के से तैयार होगा सस्ता इथेनॉल

भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान के साथ हुआ एनएसआई का करार

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) के विशेषज्ञ लुधियाना के भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान के सहयोग से मक्के से सस्ता इथेनॉल तैयार करेंगे। सोमवार को दोनों संस्थानों के बीच एमओयू साइन हुआ। करार पत्र पर एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन और भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एचएस जाट ने हस्ताक्षर किए।

प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि मक्का इथेनॉल सम्मिश्रण कार्यक्रम के 2025 के लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। चावल और मक्के से लगभग सात हजार मिलियन लीटर इथेनॉल का उत्पादन किया जाना है। इससे पेट्रोल में इथेनॉल का मिश्रण, पीने योग्य शराब और केमिकल उद्योगों में अल्कोहल की आवश्यकताओं को पूरा कर सकेगा। एनएसआई और मक्का अनुसंधान संस्थान के करार से मक्के की नई प्रजातियों के विकास के साथ ही संस्थान की नैनो इथेनॉल इकाई से इथेनॉल की गुणवत्ता और उत्पादकता का आकलन हो जाएगा। इस समझौते से मक्के की खेती कर रहे किसानों की आय बढ़ाने और कम लागत में इथेनॉल तैयार करने की दिशा में कार्य किया जाएगा।

करार पत्र पर हस्ताक्षर करते प्रो. नरेंद्र मोहन और डॉ. एचएस जाट। अमृत विचार

जलवायु आधारित प्रजातियां खोजी जाएंगी

डॉ. एचएस जाट के मुताबिक देश में मक्के की कृषि उत्पादकता करीब 2.7-2.9 टन प्रति हेक्टेयर है। यह विश्व के औसत उत्पादन की लगभग आधी है। एमओयू से मक्के की नई प्रजाति खोजी जाएंगी, जिससे की उन पर जलवायु का असर न के बराबर पड़े। मक्का आधारित इथेनॉल के लिए जैव रिफाइनरी मॉडल विकसित किया जाएगा।

मक्का से इथेनाल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए एमओयू साइन

कानपुर, 10 अप्रैल। मक्का से इथेनाल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान और अनुसंधान और विकास कार्य करने के लिए आईसीएआर-भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना के साथ एक समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किये गये। इस एमओयू पर आज लुधियाना में एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन और आईसीएआर, लुधियाना के निदेशक डा एच.एस. जाट ने हस्ताक्षर किये। समझौता ज्ञापन आईसीएआर-भारतीय मक्का अनुसंधान, सस्थान लुधियाना की ओर से विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों के लिए उपयुक्त मक्का के नये संकरों के विकास और राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की ओर से अपनी नैनो इथेनाल इकाई में उनकी इथेनाल उत्पादन क्षमता के आकलन पर आधारित है। ये समझौता मक्का की खेती कर रहे किसानों की आय बढ़ाने एवं कम लागत में मक्के से इथेनाल उत्पादन करने के लिए मील का पत्थर साबित होगा। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहाकि मक्का वर्ष 2025 तक इथेनाल सम्मिश्रण कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहा है। इसके लिए चावल, और मक्का से लगभग 7000 मिलियन लीटर इथेनाल का उत्पादन किया जाना है। ताकि पेट्रोल में इथेनाल मिश्रण, पीने योग्य शराब और केमिकल इण्डस्ट्री के क्षेत्रों में अल्कोहल की आवश्यकता को पूरा किया जा सके। उन्होंने कहाकि किसानों और उद्योग की लाभप्रदता की स्थिति के लिए हमें मक्का आधारित इथेनाल के लिए स्व-टिकाऊ जैन-रिफाइनरी माडल विकसित करने पर जोर देने के साथ कारखाने में उत्पादकता बढ़ाने पर काम करना होगा। देश में मक्का की कृषि उत्पादकता लगभग 2.7 से 2.9 टन प्रति हेक्टेअर कम है और ये विश्व के औसत की लगभग आधी है। देश में आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, बिहार, तमिलनाडु और यूपी आदि प्रमुख मक्का उत्पादक राज्यों में उत्पादकता काफई हद तक भिन्न है। यह खरीफ और रबी की फसल के रूप में भी भिन्न होती है। निदेशक डा. एच.एस. जाट ने कहाकि हम विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त मक्का के लिए नए संकर विकसित करके इस मुददे को हल करने का प्रयास करेंगे।

समझौता पत्र दिखाते प्रो.नरेन्द्र मोहन व अन्य।

समझौता पत्र पर निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन व डॉ. एच.एस.जाट ने किये हस्ताक्षर

मक्का से इथेनॉल बनाने की एनएसआई की पहल जारी

एनएसआई ने भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान लुधियाना से हाथ मिलाया

बीटीएन्न

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर ने मक्का से इथेनॉल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान और विकास कार्य करने के लिए आईसीएआर- भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू पर आज लुधियाना में प्रो. नरेंद्र मोहन, निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर और डॉ. एच.एस. जाट, निदेशक, आईसीएआर - भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना ने हस्ताक्षर किये । समझौता ज्ञापन आईसीएआर-भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना द्वारा विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों के लिए उपयुक्त मक्का के नए संकरों के विकास और राष्ट्रीय शर्कर संस्थान, कानपुर द्वारा अपनी नैनो इथेनॉल इकाई में उनकी इथेनॉल उत्पादन क्षमता के आकलन के पर आधारित है। ये समझौता मक्का की खेती कर रहे किसानो की आय बढ़ाने एवं कम लागत मे मक्के से इथेनॉल उत्पादन करने के लिए मील का पत्थर साबित होगा, दोनों निदेशकों ने आशा व्यक्त की। मक्का वर्ष 2025 तक इथेनॉल सम्मिश्रण कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहा है। इसके लिए, अनुमानों के अनुसार, चावल और मक्का से लगभग 7000 मिलियन लीटर इथेनॉल का उत्पादन किया जाना है ताकि पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण, पीने योग्य शराब और केमिकल इंडस्ट्री के क्षेत्रों मे अल्कोहल की आवश्यकता को पूरा किया जा सके, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा । उन्होंने कहा कि किसानों और उद्योग की लाभप्रदता की स्थिति के लिए, हमें मक्का आधारित इथेनॉल के लिए स्व-टिकाऊ जैव-रिफाइनरी मॉडल विकसित करने पर

जोर देने के साथ कारखाने मेउत्पादकता बढ़ाने पर काम करना होगा। देश में मक्का की कृषि उत्पादकता लगभग 2.7-2.9 टन/हेक्टेयर कम है और ये विश्व के औसत की लगभग आधी है। देश मे आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, बिहार, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश आदि प्रमुख मक्का उत्पादक रा'यों में उत्पादकता काफी हद तक भिन्न है, एवं यह खरीफ और रबी की फसल के रूप में भी भिन्न होती है। डॉ. एच. एस. जाट, निदेशक, आईसीएआर-इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च ने कहा, हम विभिन्न कृषि-जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त मक्का के नए संकर विकसित करके इस मुद्दे को हल करने का प्रयास करेंगे।

मक्के से बनाएंगे इथेनॉल किसानों की बढ़ेगी आय

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। मक्का से इथेनॉल बनाकर किसानों की आय बढ़ाई जाएगी। मक्का की ऐसी संकर प्रजातियां तैयार की जाएगीं, जिनकी पैदावार विभिन्न जलवायु परिस्थितियों से प्रभावित नहीं होगी। मक्के से इथेनॉल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सोमवार को नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) और लुधियाना के भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान ने करार किया है। एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन और मक्का अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एचएस जाट ने करार पर हस्ताक्षर किए।

समझौते के मुताबिक मक्का अनुसंधान संस्थान मक्का की ऐसी संकर प्रजातियां तैयार करेगा, जिनकी उपज हर जलवायु में होगी और एनएसआई अपनी नैनो इथेनॉल इकाई में उत्पादन क्षमता का आकलन करेगा। समझौते के बाद दोनों संस्थानों के निदेशकों ने कहा कि कम लागत से मक्के से इथेनॉल उत्पादन करने

एनएसआई और लुधियाना के संस्थान के बीच करार, मक्का के संकर बीज किए जाएंगे तैयार

और किसानों की आय बढ़ाने में यह करार मील का पत्थर साबित होगा। मक्के के इथेनॉल का पेट्रोल में तो मिश्रण होगा ही, शराब और केमिकल इंडस्ट्री की अल्कोहल की जरूरत पूरी होगी। प्रोफेसर मोहन ने कहा कि अब जैव रिफाइनरी विकसित करने और कारखानों में उत्पादकता बढ़ाने पर काम होगा।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान तथा भारतीय मक्का संस्थान द्वारा साझा कार्यक्रम पर हुए हस्ताक्षर

संवाददाता पंकज अवस्थी

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर ने मक्का से इथेनॉल उत्पादन को बढ़ावा देने अनुसंधान और विकास कार्य करने के लिए आईसीएआर–भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना के साथ समझौता ज्ञापन पर

हस्ताक्षर किए। इस एमओयू पर आज लुधियाना में प्रो. नरेंद्र मोहन, निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर

और डॉ. एच. एस. जाट, निदेशक, आईसीएआर–भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना द्वारा हस्ताक्षर

किए गए ।

समझौता ज्ञापन आईसीएआर भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना द्वारा विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों के लिए उपयुक्त मक्का के नए संकरों के विकास और राष्ट्रीय शर्कर संस्थान, कानपुर द्वारा अपनी नैनो

इथेनॉल इकाई में उनकी इथेनॉल उत्पादन क्षमता के आकलन के पर आधारित है। ये समझौता मक्के की खेती कर रहे किसानो की आय बढ़ाने एवं कम लागत में मक्के से इथेनॉल उत्पादन करने के लिए नील का पत्थर साबित होगा, दोनों निदेशकों ने ऐसी आशा व्यक्त की।

मक्का वर्ष 2025 तक इथेनॉल सम्मिश्रण कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहा है। इसके लिए, अनुमानों के अनुसार, चावल और मक्का से लगभग 7000 मिलियन लीटर इथेनॉल

का उत्पादन किया जाना है ताकि पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण, पीने योग्य शराब और केमिकल इंडस्ट्री के क्षेत्रों ने अल्कोहल की आवश्यकता को पूरा किया जा सके ।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन

ने कहा कि किसानों और उद्योग की लाभप्रदता की स्थिति के लिए, हमें मक्का आधारित

इथेनॉल के लिए स्व–टिकाऊ जैव–रिफाइनरी मॉडल विकसित करने पर जोर देने के साथ कारखानों की उत्पादकता बढ़ाने पर काम करना होगा ।

देश में मक्का की कृषि उत्पादकता लगभग 2.7–2. 9 टन/हेक्टेयर से कम है और ये विश्व के औसत की लगभग

आधी है। देश में आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, बिहार, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश आदि प्रमुख मक्का उत्पादक राज्यों में उत्पादकता काफी हद तक भिन्न है, एवं यह खरीफ और रबी की फसल के रूप में भी भिन्न होती है। डॉ. एच. एस. जाट, निदेशक, आईसीएआर–इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च ने कहा, हम विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त मक्का के नए संकर विकसित करके इस मुद्दे को हल करने का प्रयास करेंगे ।

आईसीएआर-भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान लुधियाना ने समझौता ज्ञापन पर किए हस्ताक्षर

कानपुर (नगर छाया समाचार)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर ने मक्का से इथेनॉल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान और विकास कार्य करने के लिए आईसीएआर-भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू पर आज लुधियाना में प्रो. नरेंद्र मोहन, निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर और डॉ. एच.एस. जाट, निदेशक, आईसीएआर- भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना ने हस्ताक्षर किये ।

समझौता ज्ञापन आईसीएआर-भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना द्वारा विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों के लिए उपयुक्त मक्का के नए संकरों के विकास और राष्ट्रीय शर्कर संस्थान, कानपुर द्वारा अपनी नैनो इथेनॉल इकाई में उनकी इथेनॉल उत्पादन क्षमता के आकलन के पर आधारित है। ये समझौता मक्का की खेती कर रहे किसानो की आय बढ़ाने एवं कम लागत मे मक्के से इथेनॉल उत्पादन करने के लिए मील का पत्थर साबित होगा, दोनों निदेशकों ने आशा व्यक्त की।

मक्का वर्ष 2025 तक इथेनॉल सम्मिश्रण कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहा है। इसके लिए, अनुमानों के अनुसार, चावल और मक्का से लगभग 7000 मिलियन लीटर इथेनॉल का उत्पादन किया जाना है ताकि पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण, पीने योग्य शराब और केमिकल इंडस्ट्री के क्षेत्रों मे अल्कोहल की आवश्यकता को पूरा किया जा सके, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा । उन्होंने कहा कि किसानों और उद्योग की लाभप्रदता की स्थिति के लिए, हमें मक्का आधारित इथेनॉल के लिए स्व-टिकाऊ जैव-रिफाइनरी मॉडल विकसित करने पर जोर देने के साथ कारखाने मेउत्पादकता बढ़ाने पर काम करना होगा।

देश में मक्का की कृषि उत्पादकता लगभग 2.7-2.9 टन/हेक्टेयर कम है और ये विश्व के औसत की लगभग आधी है। देश मे आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, बिहार, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश आदि प्रमुख मक्का उत्पादक राज्यों में उत्पादकता काफी हद तक भिन्न है, एवं यह खरीफ और रबी की फसल के रूप में भी भिन्न होती है। डॉ. एच.एस. जाट, निदेशक, आईसीएआर-इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च ने कहा, हम विभिन्न कृषि-जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त मक्का के नए संकर विकसित करके इस मुद्दे को हल करने का प्रयास करेंगे।